ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-1* Issue-8* September-2016
Innovation The Research Concept

आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर उच्चतर माध्यमिक छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

सान्त्वना शुक्ला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
बी0 एड0 विभाग,
दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कालेज,
कानपुर

सारांश

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ शिक्षा के शैक्षिक अवसरों की समानता पर सरकार अत्यधिक जोर दे रही है वहाँ अधिकांश जनता निर्धन व आवश्यकता ग्रस्त है। कुछ अंग्रेंजी माध्यम के स्कूलों या कुछ अन्य अच्छी संस्थाओं को छोड़कर अधिकतर संस्थाओं में छात्र–छात्रायें निम्न–मध्यम या गरीब परिवारों से आते हैं। धनाभाव के कारण इन छात्र–छात्राओं को उचित शैक्षिक सुविधायें नहीं मिल पाती तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न हो जाती है। अशिक्षित माता–पिता, उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति और समयाभाव बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर काफी प्रभाव डालते है। ऐसे परिवारों में शैक्षिक वातावरण का अभाव रहता है। जिन परिवारों में माता–पिता शिक्षित होते है वहाँ सामान्यतः बालकों के लिये सभी शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध होती हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः उच्च होती है। जिन छात्र–छात्राओं की उच्च शैक्षिक उपलब्धि होती है वो अपनी रूचि और क्षमता के अनुरूप व्यवसाय का चयन करके सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। किन्तु जिन छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है उन्हें जीवन यापन करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं को शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ रहे विभिन्न प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक– आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना

शिक्षा राष्ट्रीय विकास की आधारशिला होती है। जिस राष्ट्र के नागरिक सुशिक्षित होगें वह राष्ट्र अपना विकास सुनियोजित रूप से करेगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारी सरकारें शिक्षा के प्रति सजग रही हैं। इसी के परिणामस्वरूप समय–समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों का गठन किया गया। इसके बावजूद शिक्षा का प्रसार समान रूप से नहीं हो सका और आज भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या बहुत कम है। विभिन्न सामाजिक आर्थिक परेशानियों के कारण आज भी स्कूल जाने योग्य आयु वर्ग की 100 बालिकाओं में से 45 बालिकायें स्कूल जाने से वंचित रह जाती है। आज जहाँ देश में शिक्षा के शैक्षिक अवसरों की समानता पर सरकार अत्यधिक जोर दे रही है वहीं एक सच्चाई यह भी है कि स्वतन्त्रता के 69 वर्ष बाद भी महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है। इसका कारण आज चाहे जो भी हो लेकिन ये अवश्य है कि उनकी अवनति के लिये समाज तथा अन्य परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं।

इस प्रकार शिक्षा का मानव जीवन में बड़ा महत्व है और उसे प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक हो जाता है। पर वर्तमान समय में समाज में आर्थिक विभिन्नता के कारण आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग जो कि जनसंख्या में ज्यादा है उसके लिये शिक्षा एक मंहगी वस्तु है। परन्तु उन्हीं में से ऐसे भी बहुत से परिवार हैं जो अपनी उसी आर्थिक स्थिति में अपने बालक–बालिकाओं को शिक्षित करना चाहते हैं और उन्हें समाज में सम्मान की जिन्दगी देना चाहते है। ऐसा अनुभव किया गया है कि अच्छे विद्यालय केवल समाज के उच्च वर्ग के छात्र–छात्राओं को ही शिक्षित करने में सफल हुये हैं तथा ऐसे बालकों ने ही उच्च श्रेणी के व्यवसायों को प्राप्त किया है। जबकि अधिकांश बालक–बालिकायें ऐसे विद्यालयों में प्रवेश करते हैं जहाँ सुविधायें उच्च स्तरीय विद्यालयों के समकक्ष नहीं होती हैं तथा वह शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़ जाते हैं। जिसके कारण उन्हें परिवार तथा समाज के साथ समायोजन करने और

जीवन यापन करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः वर्तमान समय में यह ज्वलन्त समस्या है कि छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार उन्नत किया जाये क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि पर केवल बुद्धि का ही प्रभाव नहीं पड़ता है अपितु माता–पिता, शिक्षक, वातावरण आदि का भी प्रभाव पड़ता है। इसलिये वर्तमान समय में शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों को खोजना आवश्यक है।

'वैश्लेकैम्प' ने अपने अध्ययन ''वातावरण तथा अन्य विशेषतायें प्राथमिक विद्यालय में शैक्षिक निष्पत्ति को निश्चित करती है'' में निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक आर्थिक स्तर बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

गुप्ता अरूण और सुरेश ने ''लैंगिक भिन्नता, सामाजिक आर्थिक स्तर, परिवार के आकार व परिवार के प्रकार का बौद्धिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'' किया और पाया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवारों से आने वाले किशोरों की उपलब्धि मध्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवारों के किशोरों की अपेक्षा अधिक रही।

विष्ठ बी0एस0 ने ''सामाजिक आर्थिक दशाओं का शैक्षिक आकंक्षाओं तथा शैक्षिक योग्यता के साथ क्या सम्बन्ध है'' का अध्ययन करने में यह पाया कि शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर पिता की शिक्षा तथा उनकी आय से प्रभावित होता है। जिनके पिता की आय उच्च थी, उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं के मूल्य तुलनात्मक दृष्टि से उच्च पाये गये।

खंगूर आर0सी0 ने ''सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक विषयों में प्राप्त निष्पत्ति, पाठ्य सहगामी क्रियाओं के मध्य सह सम्बन्ध'' हेतु अध्ययन में यह पाया कि पिता की शिक्षा, व्यवसाय, आय तथा छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में महत्वपूर्ण सह सम्बन्ध होता है।

पारिभाषिक शब्द(Key words) की व्याख्या

सामाजिक–आर्थिक स्तर

वैल्यमैन के अनुसार – सामाजिक आर्थिक स्थिति बालक के वातावरण का एक माप बताया गया है जिसका प्रभाव अन्य कारकों की अपेक्षा बालक के व्यक्तित्व पर विस्तृत रूप से पड़ता है। मुख्यतः यह स्तर पिता का व्यवहार, आय एवं परिवार के सांस्कृतिक स्तर को व्यक्त करता है।

कुप्पू स्वामी के अनुसार – सामाजिक आर्थिक स्तर तीन तथ्यों को प्राथमिकता प्रदान करता है, माता–पिता का व्यवसाय,माता–पिता की आय, माता–पिता की शिक्षा आदि इन्हीं तीन तथ्यों के आधार पर परिवार का स्तर उच्च एवं निम्न रहता है।

शैक्षिक उपलब्धि

रावत के अनुसार ''उपलब्धि के अन्तर्गत वे सब बातें आ जाती हैं जो किसी व्यक्ति विशेष ने किसी विषय का अध्ययन करके ग्रहण की है।''

सुपर के अनुसार ''उपलब्धि परीक्षण यह ज्ञात करने के लिये प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा कोई कार्य वह कितनी भली–भाँति कर लेता है।''

भार्गव एम0सी0 के अनुसार ''एक निशिचित अवधि के प्रशिक्षण तथा सीखने के उपरान्त व्यक्ति के ज्ञान एवं समझ का किसी विषय या विभिन्न विषयों में मापन से प्राप्त परिणाम ही उपलब्धि है। इसमें अध्ययन किया जाता है कि इन विषयों में व्यक्ति ने कितना हृदयंगम किया तथा कौन–कौन सी विशिष्ट योग्यताओं को विकसित किया है।''

सामान्यतः शैक्षिक उपलब्धि से ज्ञान तथा ज्ञानार्जन की उस सीमा से अर्थ लगाया जाता है जो कि विद्यालय या महाविद्यालय विषयों में किसी विद्यार्थी द्वारा प्राप्त की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन में यू0 पी0 बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है।

शोध कार्य के उद्देश्य

1. आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को ज्ञात करना।
2. आर्थिक दृष्टि से सक्षम छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि के स्तर को ज्ञात करना।
3. आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्राओं तथा सक्षम छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पना

आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्ष

प्रस्तुत षोध अध्ययन में जनपद कानुपर नगर के यू0 पी0 बोर्ड से सम्बद्ध 05 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11 की 100 छात्राओं का चयन किया गया। सभी छात्रायें हिन्दी माध्यम की है।

1. विद्यालयों का चयन लाटरी विधि के द्वारा किया गया।
2. प्रत्येक विद्यालय से सोद्देश्य विधि से 10 आर्थिक दृष्टि से सक्षम और 10 आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्राओं काचयन किया गया। आर्थिक स्थिति जानने हेतु आय को आधार बनाया गया। 8,000 मासिक से कम आय वाली छात्राएँ कमजोर मानी गई। 8,000 मासिक से अधिक आय वाली छात्राओं को आर्थिक दृष्टि से सक्षम माना गया।

प्रदत्त संग्रहण हेतु शैक्षिक उपलब्धि का विवरण यू0पी0 बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा के अंक पत्र के आधार पर एकत्रित किया गया। मासिक आय एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति की जानकारी को एकत्र करने के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्त विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

आंकड़ो का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये सर्वप्रथम प्रश्नावली के द्वारा छात्राओं की मासिक आय एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विषय में जानकारी एकत्र

की गयी। प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर आर्थिक दृष्टि से सक्षम 50 छात्राओं तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर 50 छात्राओं का चयन किया गया। हाईस्कूल अंक पत्र के माध्यम से उपरोक्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किये गये। प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन की गणना कि गयी तत्पश्चात छात्राओं के चर का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु क्रान्तिक मान का प्रयोग किया गया।

प्राप्त परिणामों का सारणीयन, ग्राफीय निरूपण (Fig. 1)एवं व्याख्या इस प्रकार हैः–

तालिका

आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

क्र0 सं0	आर्थिक स्तर पर	N	M	S.D.	क्रान्तिक मान (C.R)	सार्थकता *
1	सक्षम छात्रांए	50	62.8	9.60	4.69	सार्थक है
2	कमजोर छात्राएं	50	54.4	8.24		

*0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका से स्पष्ट होता है कि आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण करने पर प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 62.8 एवं 54.4 तथा मानक विचलन क्रमषः 9.60 व 8.24 पाया गया। दोनों के मानों मे अन्तर पाया गया। यह अन्तर सार्थक है या नहीं, जानने के लिये क्रान्तिक अनुपात (C.R) मान की गणना करने पर यह मान 4.69 प्राप्त हुआ। सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 0.01 स्तर पर आवष्यक क्रांतिक मान (C.R) 2.63 से अधिक हैं

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में 0. 01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।,

अत एव पूर्व निर्धारित परिकल्पना ''आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकृत की जाती है।

अतः कहा जा सकता है कि आर्थिक दृष्टि से सक्षम छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्राओं के उपलब्धि के स्तर से सार्थक रूप से अधिक है। जैसा कि चित्र संख्या–1 में दर्शाया गया है।

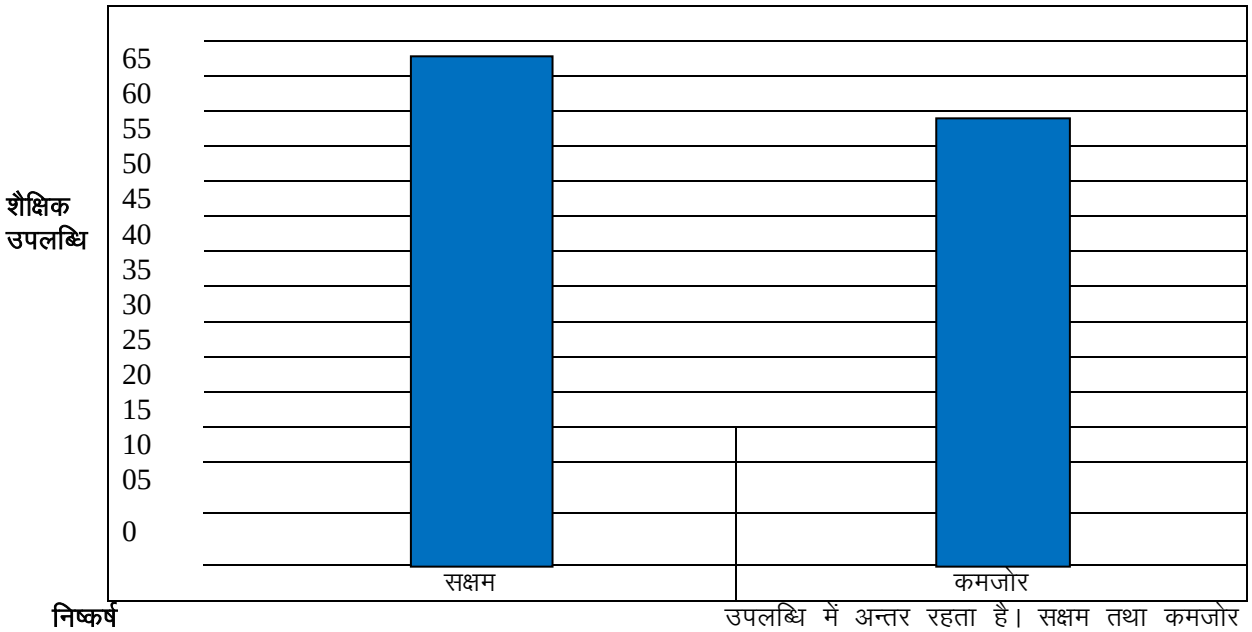

निष्कर्ष

साख्यिंकीय विष्लेषण के उपरान्त आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा कमजोर छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में 0. 01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न तथा उच्च आर्थिक स्तर के परिवारों के बच्चों की आवश्यक सुविधायें, अभिभावकों की आय एवं अभिभावाकों की शैक्षिक योग्यता में भिन्नता के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर रहता है। सक्षम तथा कमजोर दोनों वर्गों में अन्तर होने के निम्न कारण पाए गए –

1. सक्षम वर्ग की छात्राओं को वो सभी शैक्षिक सुविधायें मिल जाती हैं जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रबल बनाती हैं जबकि कमजोर वर्ग की छात्राएं इन सुविधाओं से वंचित रह जाती हैं।
2. सक्षम वर्ग की छात्राओं को उनके अभिभावक शैक्षिक उन्नति के लिये प्रेरित करते रहते हैं। जबकि कमजोर वर्ग की छात्राओं के अभिभावक शैक्षिक उन्नति के लिये प्रेरित नहीं करते।

3. उचित पोषण के अभाव में कमजोर वर्ग की छात्राओं का बौद्धिक स्तर गिर जाता है जिसके कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम हो जाती है।
4. सक्षम वर्ग की छात्राओं को विद्यालय शिक्षा के अतिरिक्त अन्य प्रकार का ज्ञान समाचार पत्र, टी0वी0, रेडियो, इंटरनेट तथा अन्य संचार के साधनों से प्राप्त होता है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में महत्वूपर्ण भूमिका निभाता है। जबकि कमजोर वर्ग की छात्रायें इस ज्ञान से वंचित रह जाती हैं। अतः इस कारण भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कमी रहती है।

शैक्षिक उपयोगिता

1. प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षकों को आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं की कठिनाइयों को सहानुभूतिपूर्वक समझकर उन्हें दूर करके उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में मदद करने की दिषा में प्रेरित कर सकता है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य अभिभावकों को अपनी बच्चियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने, उनकी समस्याओं से अवगत होने और उनको उचित निर्देशन देने की दिशा में अन्तर्दृष्टि दे सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन सरकार को आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की छात्राओं की शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क करने के साथ–साथ उनको रोजगार प्रदान करके उन्हें आत्म निर्भर बनाने की नयी योजना बनाने में सहयोग दे सकता है।
4. सामान्य बुद्धि वाली छात्राओं को अपनी रूचि के अनुरूप विषयों का चयन करने एवं अपनी अभिक्षमता के अनुसार मेहनत करके अपनी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित करेगा।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों एवं सर्वशिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमों को कागजों पर ही नही वरन् हकीकत में भी सफल बनाने लिये शिक्षित नवयुवकों, नवयुवतियों, सरकारी कर्मचारियों तथा शिक्षित गृहणियों को भी सहयोग करने के लिये प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- *बुच,एम0बी0, ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (Voll. III, IV & V)*
2- *माध्यमिक शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन, शिक्षा मंत्रालय नई दिल्ली पृ0 30*
3- *सी0बी0 गुड, डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन, मैक– ग्रो–हिल कम्पनी आई0एन0सी0 न्यूयॉर्क।*
4- *डा0 आहूजा राम, आधुनिक भारत की सामाजिक समस्यायें, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, पृष्ठ 199*
5- *रावत डी0एन0, मेजरमेन्ट इवेलुएशन एण्ड स्टेटिसटिक्ट इन एजूकेशन, न्यू देहली, 1970, पृष्ठ 89*
6- *भटनागर सुरेश, तहीम प्रमिला, बाल–विकास और पारिवारिक सम्बन्ध लायल बुक डिपो, प्रथम संस्करण 1975, पृष्ठ383–399*
7- *गुप्ता रामबाबू, शिक्षा के सिद्धान्त, न्यू पब्लिशिंग हाउस, कानपुर (1976) पृष्ठ 161*
8- *शर्मा, डॉ0 रामनाथ, पेरेन्ट चाइल्ड रिलेशनशिप इन सोसियल साइकोलॉजी, ओरियन्ट पब्लिकेशन हाउस, कानपुर।*
9- *भार्गव, एम0सी0, आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा पंचम संस्करण 1982, पृष्ठ 390*
10- *गैरिट, हेनरी ई0, (1989), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना।*
11- *कुप्पू स्वामी : सामाजिक–आर्थिक स्तर पैमाने का मैनुअल।*
12- *विष्ठ जी0एस0 सामाजिक आर्थिक दशाओं का शैक्षिक आकांक्षाओं तथा शैक्षिक योग्यताओं के साथ सम्बन्ध।*
13- *वर्मा प्रीति, बाल मनोविज्ञान, बाल विकास (1999) पृष्ठ 30*
14- *कपिल, एच0के0 (2004), अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा।*
15- *गुप्ता डॉ0 एस0पी0 एवं अलका गुप्ता, (2004), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृ0 485–500*
16- *सुखिया, एम0पी0 (2004,) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
17- *सिंह, अरूण कुमार (2012) मनोविज्ञान, सामाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली पृष्ठ 217–224*
18- *सिंह अरूण कुमार (2013) शिक्षा मनोविज्ञान मोती लाल बनारसी दास दिल्ली। पृष्ठ 788–794*